हिंदी–मराठी दलित स्त्री आत्मकथाओं में अस्मितामूलक विमर्श

Identity Discourse in
Hindi – Marathi Dalit Women Autobiographies

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड़

के मानव्य विद्या संकाय अंतर्गत पीएच्.डी (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध विषय का प्रारूप

शोधार्थी

राधा लखनलाल देवहंस

शोध निर्देशक

डॉ. संजीवकुमार नरवाडे,

प्रोफेसर

हिंदी संशोधन केंद्र

आदर्श एज्यूकेशन सोसायटीचे,

कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,

हिंगोली ४३१ ५१३ (महा.)

मार्च – २०२२

''शोधकार्य की रूपरेखा (Synopsis of Research Work)''

हिंदी –मराठी दलित आत्मकथाओं में अस्मितामूलक विमर्श

(Identity Discourse in Hindi-Marathi Dalit Women Autobiographies)

१. प्रस्तावना : (Introduction)

अस्मिता स्वत्व का बोध कराने वाली शक्ति है, जिसमें निजता होती है। अस्मिता शब्द जहाँ निजत्व से बोध करवाता है, वही जीवन के दूसरे पहलूओं से भी इसका संबंध देखा जा सकता है, जिसका रूप समय के साथ परिवर्तित होता रहता है। समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपनी अस्मिता को प्राप्त करने के लिए आजीवन संघर्षरत रहता है। वर्तमान २१ वी सदी के आधुनिक युग में प्रत्येक व्यक्ति को अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए किसी–न–किसी रूप में संघर्ष करना पड़ रहा है।

वास्तव में बीसवी सदी विमर्शों की सदी रही है। पिछले कुछ दशकों में विचारधारा और चिंतन की दुनिया में आए बदलाव ने अस्मिता के प्रश्न को केंद्र में लाकर खड़ा किया है। इसी का परिणाम है कि आज विभिन्न प्रकार की अस्मिताओं का जन्म हुआ है और वे निरंतर विकसित होती जा रही हैं। इसी दौर में विमर्शो की बहुत चर्चा होती रही है, जिनमें स्त्री, दलित और आदिवासी विमर्श प्रधान है। कविता, कहानी उपन्यास, आत्मकथा जैसे विधागत माध्यमों से विमर्श होता आया है। वैचारिक परिवर्तन की यह लड़ाई किसी के खिलाफ लड़ी नहीं जा रही है, अपितु अपनी पहचान और अस्मिता के लिए सकारात्मक दृष्टि से लड़ी जा रही है। जब तक मनुष्य का आंतरिक संघर्ष व्यवस्थित, स्पष्ट और मुखर नहीं होगा, तब तक वह किसी भी प्रकार की बाहूय समस्याओं से लड़ नहीं सकता।

अस्मिता विमर्श से तात्पर्य है– आत्मनिर्णय, स्वंय की पहचान का प्रश्न और अपने अस्तित्व का बोध–ज्ञापन।

हिंदी साहित्य में अस्मितामुलक विमर्श एक नया साहित्यिक विमर्श है। अस्मिता विमर्श के नाम पर चलनेवाले विभिन्न साहित्यिक आंदोलनो के प्रभाव स्वरूप इस संदर्भ में किसी विशेष अवधारणा का निर्धारण करवाना एक कठिण कार्य है। कई बार अस्मितामूलक विमर्श बौद्धिक एवं साहित्यिक स्वरूप ग्रहण करता दिखाई देता है।

वास्तव में 'अस्मितामूलक–विमर्श एक नविन विमर्श है, इस पर विभिन्न विचार धाराओं एवं सिद्धांतो का प्रभाव दिखाई देता है। इस पर अस्तित्ववाद, मार्क्सवाद, आधुनिकतावाद, समाजवाद, संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद, उत्तर आधुनिकतावाद, उत्तम औपनिवेशवाद या सबार्ल्टन दृष्टि जैसी विभिन्न विचार धाराओं एवं सिद्धांतो का व्यापक प्रभाव रहा है। मुख्य रूप से उत्तर आधुनिकतावाद, उत्तर औपनिवेशतावाद और सबार्ल्टन दृष्टि 'अस्मितामूलक–विमर्श' संबंधी अवधारणा एवं सैद्धांतिकी का निर्माण करती है। अत: अस्मितामूलक विमर्श के संदर्भ में उक्त विचारधाराओं का विचार करना आवश्यक हो जाता है।

अस्मिता अपनी निजी पहचान के साथ–साथ उस क्षेत्र और समाज की भी पहचान है जो हमारे संदर्भ तय करती है। ये सारे संदर्भ जाति, रंग, वर्ण, नस्ल, क्षेत्र, भाषा, लिंग (Gender), पेशा आदि के रूप में हमारे अंतरंग के हिस्से होते है।

'अस्मिता' का सीधा संबंध हमारी पहचान से होता है। अस्मिता व्यक्तिगत भी हो सकती है और सामूहिक भी। 'अस्मिता' के संदर्भ हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार राजेंद्र यादव कहते है, "'अस्मिता' जितनी मेरी है उतनी ही मेरे परिवेश और परंपरा का भी। उसमे वर्ग, वर्ण, क्षेत्र, धर्म, लिंग, परंपराएँ सभी कुछ घुसे और घुले–मिले हुए है।"(हंस, जुन २००९, पृ.संख्या ०९)

अस्मिता–बोध की तभी आवश्यकता पड़ती है जब हमारे अस्तित्व एवं पहचान पर खतरा मँडराने लगता है। अगर किसी व्यक्ति या समूदाय के जाति, धर्म, कुल, वंश, राष्ट्र, भाषा, लिंग, आदि पहचानों (Identification) को मिटाने या हीन, तुच्छ, गलत साबित करने की कोशिश की

जाती है तो वह व्यक्ति या समूदाय अपनी इन पहचानों को बचाने के लिए प्रयत्न करता है। संघर्ष करता है। उसका यह प्रयत्न कभी आंदोलन, विचारधारा, साहित्य, कला आदि कई रूपों में अभिव्यक्त होते रहता है। अस्मिता का यह सर्वव्यापी दायरा अपनेआप में एक बौद्धिक, मनोवैज्ञानिक एवं ऐतिहासिक संरचना का रूप धारण कर लेता है, जिसकी रक्षा के लिए व्यक्ति या समाज कुछ भी कर सकते है।

अस्मिता प्राप्ति के लिए संघर्ष की शुरूवात व्यक्तिगत या सामुदायिक तौर पर अपने वंचित, पीड़ित, प्रताड़ित होने के अहसास से होती है। इसमें अपनी पहचान प्राप्त करना ही सबसे बड़ा लक्ष्य हो जाता है। अधिकारों से या प्रतिष्ठा से वंचित व्यक्ति या समूदाय समाज के द्वारा किए गए अन्याय और सदियों से होते आ रहे दमन, शोषण, उत्पीड़न के विरूद्‌ध संघर्ष के लिए खड़ा हो जाता है। अस्मिता प्राप्ती के लिए किए गए प्रयास या संघर्ष व्यक्ति तथा समूदाय को जागरूक बनाते है, जिससे वे दिशाहीन होने से बच जाते है।

'अस्मिता' के मूल में संघर्ष विद्यमान होता है। संघर्ष हमेशा वे ही करते है जिनका दमन, शोषण हो रहा है। शोषण हमेशा पीड़ित एवं वंचित लोगों का ही होता है, अत: अस्मिता–बोध का संबंध वंचितों की मुक्ति से ही है। यह मुक्ति न्याय, हक की माँग करती है।

विगत कुछ वर्षों में चिंतन की दुनिया में आए वैचारिक और अवधारणात्मक बदलावों ने अस्मिता के प्रश्न को केंद्र मे लेकर खड़ा कर दिया है, जिसने विभिन्न प्रकार की अस्मितो को जन्म दिया है; जैसे राष्ट्रीय अस्मिता, सांस्कृतिक अस्मिता, स्त्री अस्मिता, दलित अस्मिता आदि। विचारधारा और मुद्‌दे भितर होने के बावजूद भी हो रहे सभी आंदोलन 'अस्मिता आंदोलन' का दावा जरूर करते है। परंतु उसमें पहचान महत्वपूर्ण होती है, जब कोई व्यक्ति या समुदाय अपने अस्मिता की तलाश करने की कोशिश करता है तो उसके सामने यह प्रश्न उठ जाता है कि, 'हम कौन है? और समाज में हमारी क्या हैसियत है? इन प्रश्नों से अस्मिता निर्माण की प्रक्रिया शुरू

होती हैं। अस्मिता या पहचान के लिए समाज में स्त्री दलित, आदिवासी, व्यक्ति समुहों का संघर्ष जारी है उनके इस संघर्ष को उनके अपने विशिष्ट अस्मितामूलक दायरे में जब देखा जाता है तो विमर्श चल पड़ता है। यह विमर्श प्रत्यक्ष समाज में या साहित्य में होने लगता है। हिंदी साहित्य में स्त्री, दलित, आदिवासी, विमर्श न केवल चर्चिच रहे है बल्कि वे स्थापित भी हो गए है। इसी श्रृंखला में साहित्य में अभिव्यक्त 'स्त्री' और 'दतित' को अस्मितामूलक विमर्श की दृष्टि से देखा जा रहा है।

स्त्री अपनी पहचान के लिए संघर्षरत है। सदियों से उसके जिस 'स्व' का अपहरण पितृसत्ताक व्यवस्था ने किया या उसे वापस लाने का प्रयास भी अस्मितामूलक संघर्ष है।

स्त्री की स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता, सक्षमता आदि बिंदु स्त्री विमर्श से जुड़े है। जब जाति को लेकर शोषण, उत्पीड़न एवं दमन की बात सामने आती है तो वे भी अस्मिता को लेकर चलते दिखाई देते है। दलित जीवन और दलितों की समस्याओं को केंद्र में रखकर जो साहित्य लिखा गया हे। उसे 'दलित साहित्य' माना जाता है। हमारी हिन्दु समाज व्यवस्था ने दलितों को कनिष्ठ स्थान देकर उन्हें न्याय, शिक्षा, समानता एवं स्वतंत्रता आदि मौलिक अधिकारों से वंचित रखने का काम किया। इस व्यवस्था के विरोध में दलित लोग अपनी अस्मिता की रक्षा हेतु संघर्ष करने लगे, जिसका स्वानुभूति के धरातल पर चित्रण होने लगा। यह चित्रण भारतीय साहित्य में सर्वप्रथम मराठी साहित्य की प्रेरणा स्वरूप आया। आज भारतीय साहित्य की एक स्वतंत्र विधा के रूप में 'दलित साहित्य और 'स्त्रीवादी साहित्य' स्थापित हो चुका है।

आत्मकथा लेखन में स्वानुभूति और स्वकथन महत्वपूर्ण होता है। इसमें लेखक द्वारा कही गई बातों को विश्वास करके समझाया जाता है क्योंकि उसके लिए लेखक स्वंय साक्षी तथा जिम्मेदार होता है। आत्मकथा में कथाकार के जीवन व्यक्तित्व का उद्घाटन होता है। आत्मकथा का उद्देश लेखक द्वारा स्वंय का आत्मनिर्माण करना, आत्म परिक्षण करना, अतित की स्मृतियों को पुर्नजीवित

करना और अपनी स्वंय की पहचान करना होता है। इस दृष्टि से आत्म कथा में आत्मविश्लेषण आत्मलोचन, समाज का चित्रण, विभिन्न घटनाओं का विवरण और वास्तविक जीवन का परिचय महत्वपूर्ण होता है।

आत्मकथा लेखन में शुरू शुरू में पुरूष लेखकों का वर्चस्व रहा है। सन १९५० के बाद स्त्री लेखिकाएँ इस क्षेत्र में लेखन का प्रयास करती दिखाई देती है। श्रीमती जानकी देवी बजाज की 'मेरी जीवन यात्रा (१९५६) यह हिंदी की पहिली आत्मकथा है। आगे चलकर अमृता प्रीतम (रसीदी टिकट), प्रतिभा अग्रवाल (दस्तक जिंदगी की) कुसुम अंसल (जो कल नही गया) शीला झुनझुनवाला (कुछ कही कुछ अनकहीं) मैत्रेय पुष्पा (गुडिया भीतर गुड़िया) चंद्रकिरण सोनेरेक्सा (पिंजरे की मैना) चंद्रकांता (हाशिए इबारतें) आदि ने हिंदी महिला आत्मकथाओं को विकसित किया है। इसी परंपरा में दलित महिला लेखिकाओं ने अपनी अनुभूतियों को व्यक्त कर हिन्दी महिला आत्मकथा लेखन को समृद्ध किया है। ऐसी दलित हिन्दी महिला आत्मकथाकारों में कौशल्या बैसंत्री (दोहरा अभिशाप), सुशीला टाकभौरे (शिकंजे का दर्द), सुमित्रा महरौल (टुटे पंखों से परवाज तक), कौशल पवार (बंवडरों के बीच) आदि का महत्वपूर्ण स्थान है।

मराठी में १९८३ में प्रकाशित पहिली दलित स्त्री आत्मकथा 'माज्यां जल्मांची चित्तरकथा' हैं। मराठी स्त्री आत्मकथा लेखन में बेबी कांबळे (जिणं आमुचं), जनाबाई गिऱ्हे (मरणकळा) यशोधरा गायकवाड (माझी मी), शांताबाई कांबळे (माज्या जल्मांची चित्तरकथा), मुक्ताबाई सर्वगौड (मिटलेली कवाडे), विमल गोर (तीन दगडाची चुलं) उर्मिला पवार (आयदान) आदि लेखिकाओं की लम्बी सूची है।

इन आत्मकथाओं में लेखिकाओं द्वारा भोगा हुआ जीवन यथार्थरूप में सामने आता है।

आत्मकथाओं में स्त्री दलित महिलाओं का जीवन–चरित्र यथार्थ रूप में हुआ है। दलित स्त्रियों को सामने जीवन की चुनौतियाँ किस प्रकार जाती और लिंग के आधार पर उन्हें हाशिए पर

छोडने के लिए विवश कर रही है इसका सारा लेखा जोखा आत्मकथा का प्रतिपाद्‌य विषय है। शिक्षा, अशिक्षा, स्पृश्यता, अस्पृश्यता एवं लिंग के आधार पर होनवाली भेदोपनिति का खुला चित्रण आत्मकथाओं में हुआ हैं।

२. विषय चयन : (Selection of Subject)

'स्त्री की व्यथा कथा को स्त्री ही समझ सकती है'। इस कथन के अनुसार शोधार्थी स्वंय स्त्री होने के कारण उसने स्त्री आत्मकथाकारों की आत्मकथाओं को शोधकार्य के लिए चुना है। डॉ. बाबासाहब आंबेडकरजी के मतानुसार 'स्त्री दलितों में दलित है', शोधार्थी की धारणा पुख्ती हो गई की स्त्री और दलित आत्मकथाकार की अस्मिता की पहचान करना। इस विचार से ''हिंदी–मराठी दलित स्त्री आत्मकथाओं में अस्मितामूलक विमर्श'' इस शोध विषय का चयन किया। शोधार्थी के मन में दलित स्त्री आत्मकथाकारों के जीवन की व्यथा कथा जानने की जिज्ञासा थी। साथ ही स्त्री एंव दलितों के जीवन का अस्मितामूलक विमर्श करना, इसी जिज्ञासा की पूर्ति के लिये उक्त शोध विषय पर अनुसंधान करने का संकल्प है।

३. अनुसंधान की समस्या : (Problem of Research)

''हिंदी–मराठी दलित स्त्री आत्मकथाओं में अस्मितामूलक विमर्श'' इस विषय से संबंधित शोध समस्या को निम्नवत देखा गया है–

– समाज–व्यवस्था में स्त्री–अस्मिता का हनन हो रहा है।

– भारतीय समाज व्यवस्था में दलितों को निम्न स्थान दिया गया है।

– दलितों पर अन्याय, अत्याचार हो रहे है, उनका शोषण, उत्पीडन हो रहा है।

– दलित अपने बुनियादी अधिकारों से वंचित है।

– स्त्री पर अन्याय अत्याचार हो रहे है।

– स्त्री के शोषण, उत्पीडन एवं जीवनयापन की समस्या।

– स्त्री का पुरूषों द्वारा प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष शोषण जारी है।

– दलित स्त्री द्वारा इन सब विसंगतियों का प्रतिरोध जारी है।

अनुसंधान का विषय का क्षेत्र स्पष्टत: दो भाषा–साहित्य की एक विशिष्ट विधा और विशिष्ट विधा परक साहित्य को विशिष्ट विमर्श की दृष्टि तक सीमित है। इसलिए हिंदी मराठी दलित–स्त्री आत्मकथाओं में अभिव्यक्त अस्मितामूलक विमर्श का सूक्ष्म अनुशीलन किया जाएगा।

४. अनुसंधान का महत्व : (Importance of Research)

साहित्य में अभिव्यक्त अस्मितादर्शक चिंतन की दृष्टि से ''हिन्दी, मराठी, दलित स्त्री आत्मकथाओं में अस्मिता मूलक विमर्श'' में इस विषय का शोध–विषय का शोध की दृष्टि से महत्व है; वे महत्व के बिंदु निम्नलिखित है–

– भारतीय स्त्री और उसके जीवन–संघर्ष को व्यवस्थागत समकालीन परिप्रेक्ष्य में समझने में सहायक

– दलित–स्त्रियों की अस्मिता को नजर अंदाज कर उसे कैसे हाशिए पर छोडा जा रहा है इसका आकलन सामने आएगा

– यह अध्ययन दलित विमर्श और स्त्री विमर्श के विभिन्न बिंदुओ को समझने में सहायक होगा।

– भारतीय समाज–व्यवस्था में स्त्रियों का वर्ण या जाति और लिंग के आधार पर हो रहे शोषण को साहित्य में कैसे देखा गया है, यह स्पष्ट होगा।

– स्त्रियों की सामाजिक, पारिवारिक, दाम्पत्य एवं सांस्कृतिक स्थिती–गति को समझने के

लिए उपयुक्त सिद्ध होगा।

– भारतीय दलित–स्त्री की व्यथा को हिंदी–मराठी आत्मकथा साहित्य मे किस प्रकार गहनता एवं सुक्ष्मता से स्पष्ट किया गया है, इसके अनुशीलन की दृष्टि से प्रस्तुत शोधकार्य का महत्व है।

– दो भाषाओं में लिखि गई दलित स्त्री आत्मकथाओं के तुलनात्मक अध्ययन के दृष्टि से महत्व है।

– हिंदी–मराठी आत्मकथाओं के विस्तृत अध्ययन के लिए दिशा–निर्देशन के रूप में शोध का अपना विशेष महत्व है।

५. अनुसंधान के उद्देश्य : (Objectives of Research)

किसी भी कार्य की संपनता के लिए कार्य–कारण की श्रृंखला जरूरी होती है। किसी भी कार्य के पिछे कार्य–कारणभाव होता है। अनुसंधान कार्य भी इससे अछुता नहीं है। बिना उद्देश्य के अनुसंधान कार्य दिशाहिन और असफल होता है। इसलिए अनुसंधान कार्य को एक निश्चित दिशा देकर तथ्यों की जानकारी प्राप्त करने हेतु अनुसंधान के कुछ उद्देश्य निर्धारित किये जाते है। इस दृष्टि से ‘‘हिंदी–मराठी दलित स्त्री आत्मकथाओं में अस्मितामूलक विमर्श’’ अनुसंधान के निम्नांकित उद्देश्य है।

१. आत्मकथा साहित्य विधा का स्वरूपगत अध्ययन कर हिंदी–मराठी दलित स्त्री आत्मकथाओं का साहित्यिक परिचय प्राप्त करना।

२. हिंदी–मराठी स्त्री आत्मकथाओं में अभिव्यक्त स्त्री के अस्मितामूलक विमर्श को पहचानना।

३. हिंदी–मराठी स्त्री आत्मकथाओं में अभिव्यक्त दलित स्त्रियों के अस्मितामूलक विमर्श को पहचानना।

४. हिंदी–मराठी दलित स्त्री आत्मकथाओं की शिल्प संरचना का अध्ययन करना।

५. हिंदी–मराठी दलित स्त्री आत्मकथाओं का अस्मितामूलक विमर्श की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन करना।

६. परिकल्पना : (Hypothesis)

संभावित विषय पर अनुसंधान करने से पूर्व अनुसंधान की परिकल्पना, पूर्व मान्यताएँ अथवा कामचलाऊ निष्कर्ष प्रतिपादित किए जाते है। इससे अनुसंधान को निश्चित दिशा मिलती है। अत: उक्त अनुसंधान की परिपूर्ति के लिए कुछ कार्यवाहक पूर्व मान्यताएँ निर्धारित कि गई है–

१. पुरूषप्रधान संस्कृति तथा सामाजिक परिवेश में स्त्री का शोषण हो रहा है।
२. समाज व्यवस्था में स्त्रियों पर विशेषत: दलित स्त्रियों पर अन्याय, अत्याचार हो रहे है।
३. व्यवस्था में स्त्रियों की अस्मिता के साथ खिलवाड किया जा रहा है।
४. भारतीय समाज व्यवस्था में दलित स्त्रियों की पहचान को नजरअंदाज़ किया जा रहा है।

७. अनुसंधान की व्याप्ति एवं सीमाएँ : (Scope and Limitation of Research)

मराठी साहित्य में १९६० से दलित–विमर्श का मूलक चित्रण होने लगा, जिसका पर्यावसान 'दलित साहित्य' के रूप में हुआ। आगे चलकर मराठी दलित साहित्य के प्रभाव से हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषा साहित्य में दलित–विमर्श आया। मराठी में 'आत्मकथन' एक स्वतंत्र विधा के रूप में विकसित हुआ। २० वी शताब्दी के ८ वे दशक के मराठी साहित्य में दलित स्त्री आत्मकथा लेखन का प्रारंभ हुआ है। और आगे चलकर कई महिला आत्मकथाकारो ने अपने रचनात्मक कर्म से उसे विकसित किया है। हिंदी में अंतिम दशक में पहली स्त्री दलित आत्मकथा कौशल्या बैसंत्री द्वारा (दोहरा अभिशाप) लिखी गई। आगे चलकर सुशीला टाकभौरे, सुमित्रा महरौल, कौशल पवार, उर्मिला पवार, अनिता भारती, कोवरी, रजनी तिलक आदि महिला आत्मकथाकारों ने अपना योगदान देकर हिंदी आत्मकथा को विकसित किया है। हिंदी–मराठी दलित–स्त्री आत्मकथाओं में

अस्मितामूलक विमर्श के अंतर्गत दलित–स्त्रियों की वेदना, पीडा, दु:ख दर्द–त्रासदी संवेदना का जो प्रस्तुतिकरण हुआ है, उसका अन्वेषण करना प्रस्तुत शोधकार्य का उद्देश्य रहा है।

हिंदी–मराठी की दलित स्त्री आत्मकथाओं का अस्मितामूलक विमर्श की दृष्टि से सूक्ष्म विवेचन शोध में विहित है। यह शोधमात्र हिंदी–मराठी की दलित–स्त्री आत्मकथाओं के विवर्शमूलक के अध्ययन तक ही सीमित है। प्रस्तुत शोधकार्य की कुछ सीमाएँ है–

हिंदी–मराठी के समग्र आत्मकथा साहित्य का अध्ययन, संरचनागत अध्ययन, पुरूष और स्त्री लेखकों की रचनाओं का अध्ययन आदि।

८. साहित्य पुनरावलोकन : (Review of Literature)

अनुसंधान के क्षेत्र मे अस्मितामूलक विमर्श पर स्वतंत्र रूप से विभिन्न दृष्टि से शोधकार्य संपन्न हो रहे है। साहित्य की कविता, कहानी, नाटक, कथा, उपन्यास आदि जैसी महत्वपूर्ण विधाओं में अस्मिता मूलक के चिंतन के दृष्टि से शोध हो रहे है। इस क्षेत्र से संबंधित और हिंदी–मराठी आत्मकथा पर जो शोधकार्य संपन्न हुए है, वे निम्नलिखित है।

१. 'स्त्री हिंदी आत्मकथा साहित्य: एक अनुशिलन' (इक्कीसवीं सदी के विशेष संदर्भ में) शीर्षक से सन २०१९ में प्रीती दुबे ने डॉ.श्रीमती कांचन सक्सेना के निर्देशन में कोटा विश्वविद्यालय, कोटा से पीएच्.डी के लिए शोधकार्य किया है।

२. 'हिंदी एवं मराठी महिला आत्मकथाकारों का तुलनात्मक अध्ययन' शीर्षक से सन २०१८ में विभा लाड ने प्रो. वृशाली मांद्रेकर के शोध निर्देशन में गोवा विश्वविद्यालय, गोवा से पीएच्.डी के लिए शोधकार्य किया है।

३. 'इक्कीसवीं सदी का महिला आत्मकथा लेखन: संघर्ष और सृजन' शीर्षक से सन २०१८ में श्रीमती हेमलता मीना ने डॉ.लिला मोदी के निर्देशन में कोटा विश्वविद्यालय, कोटा से पीएच्.डी के लिए शोधकार्य किया है।

साहित्य और उसके किसी एक विशिष्ट विधा और विशिष्ट दृष्टिकोन को लेकर अर्थात अस्मितामूलक विमर्श के किसी पहलू को लेकर जो शोध कार्य संपन्न हो चुके है या हो रहे है उनमें संभाव्य विषय निश्चित ही अलग है। जहाँ तक मेरी जानकारी है उक्त विषय पर किसी विश्वविद्यालय में शोध कार्य नहीं हुआ है।

९. अनुसंधान प्रविधि : (Research Methodology)

प्रस्तुत शोध में मुख्य रूप से तुलनात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया जाएगा। इसके साथ–साथ ही दलित और स्त्रियों के जीवन से जुडी समस्याओं एवं समाजशास्त्रीय, मनोवैज्ञानिक, वर्णनात्मक, आदि प्रविधियों का आवश्यकतानुरूप प्रयोग किया जाएगा। विषय के सूक्ष्म–अध्ययन विश्लेषण के लिए आलोचनात्मक पद्धति एवं निष्कर्ष पद्धति का यथा संभव प्रयोग किया जाएगा।

१०. अध्यायीकरण : (Chapterlazation)

''हिंदी–मराठी दलित स्त्री आत्मकथाओं में अस्मितामूलक विमर्श'' शोध विषय के अनुशीलन के लिए निम्न अध्यायों में विभाजित किया गया है।

१. प्रथम अध्याय : आत्मकथा, अस्मितामूलक विमर्श: अवधारणा, स्वरूप एवं इतिहास

१.१ अस्मितामूलक विमर्श : अवधारणा, स्वरूप

१.२ आत्मकथा : परिभाषा, स्वरूप

१.३ आत्मकथा का तात्विक विवेचन

१.४ हिंदी दलित स्त्री आत्मकथा का ऐतिहासिक विवेचन

१.५ मराठी दलित स्त्री आत्मकथा का ऐतिहासिक विवेचन

२. द्वितीय अध्याय : दलित स्त्री आत्मकथा का परिचय

२.१ हिंदी दलित स्त्री आत्मकथा

२.२ मराठी दलित स्त्री आत्मकथा

३. तृतीय अध्याय : हिंदी–मराठी दलित स्त्री आत्मकथाओं में अस्मितामूलक विमर्श: स्त्री चिंतन

३.१ हिंदी दलित स्त्री आत्मकथाओं में स्त्री विमर्श

३.२ मराठी दलित स्त्री आत्मकथाओं में स्त्री विमर्श

४. चतुर्थ अध्याय : हिंदी–मराठी दलित स्त्री आत्मकथाओं में अस्मितामूलक विमर्श: दलित चिंतन

४.१ हिंदी दलित स्त्री आत्मकथाओं में दलित विमर्श

४.१ मराठी दलित स्त्री आत्मकथाओं में दलित विमर्श

५. पंचम अध्याय : हिंदी–मराठी स्त्री आत्मकथाओं की शिल्प संरचना

४.१ हिंदी दलित स्त्री आत्मकथाओं की भाषा–शैली, शिल्प संरचना

४.२ मराठी दलित स्त्री आत्मकथाओं की भाषा–शैली, शिल्प संरचना

– **उपसंहार**

संदर्भ ग्रंथ सूचि :

अ). मूल ग्रंथ :

दलित स्त्री–आत्मकथा

१. दोहरा अभिशाप – कौशल्या बैसंत्री, परमेश्वर प्रकाशन, दिल्ली (१९९९)

२. शिकंजे का दर्द – सुशीला टाकभौरे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली (२०११)

३. टूटे पंखों से परबाज तक – सुमित्रा महरौल (२०२१)

४. बवंडरो के बीच– कौशल पवार (२०२१)

५. एक अनपढ़ कहानी– सुशीला राय

६. अपनी जमीं, अपना आसमां – रजनी तिलक

७. छूटे पत्रों की उड़ान – अनिता भासी

८. टुकडा टुकडा जीवन–कावेरी

९. हादसे –रमणिका गुप्ता, राधाकृष्ण पेपर बेक्स, दिल्ली २००५.

मराठी दलित स्त्री आत्मकथा

१. रात्रदिन आम्हा – शांताबाई धनाजी दानी,

२. माझ्या जल्यांची चित्तरकथा– शांताबाई कृष्णाजी काम्बले (१९८३)

३. अन्त:स्फोट – कुमुद पावडे,

४. आयदान – उर्मिला पवार, ग्रंथाली प्रकाशन, २००६

५. मला उद्‌धवस्त व्हायचंय – मल्लिका अंबर शेख, मॅजेस्टिक बुक स्टॉल, मुंबई १९८४.

६. जीणं आमुचं – बेबी काम्बले

७. मिटलेली कवाडे– मुक्ता सर्व गौड

८. माझे शिक्षण – काशीबाई कानिटकर

९. मरणकला– जनाबाई गिऱ्हे

१०. तीन दगडांची चूल – विमल गौरे

११. करक्कू – बामा (१९९२) – अन्यभाषी –तमिळ (अनुदित)

आ). सहायक ग्रंथ :

१. तुलनात्मक साहित्य: नए सिध्दांत और उपयोजन, न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन, दिल्ली, २००६.

२. तुलनात्मक साहित्य: भारतीय परिप्रेक्ष– इंद्रनाथ चौधरी, नेशनल हाउस पब्लिशिंग, नई दिल्ली २००६

३. भारतीय नारी अस्मिता की पहचान– डॉ. उमा शुक्ल, भारत भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, २००९

४. हिंदी आत्मकथात्मक साहित्य– चम्पा श्रीवास्त, साहित्यवाणी, इलाहाबाद, २०००

५. तुलनात्मक साहित्य: कुछ स्थितियाँ और दिशाएँ, चंद्रकांत बांदिवडेकर,

६. महिला आत्मकथा लेखन में नारी– डॉ. रघुनाथ गणपति देसाई, ए.बी.एस पब्लिकेशन, वाराणसी, २०१२.

७. हिंदी आत्मकथा का साहित्य (स्वरूप, विवेचन, विकास) डॉ. विश्वबंधु शास्त्री, विद्यालंकार, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, १९८४

८. आधुनिक मराठी वाड्मयातील स्त्रियांची आत्मकथने : एक अभ्यास साहित्य प्रकाशन केंद्र, जयपुर, १९८६

९. महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते संदर्भ : – डॉ. शिल प्रभा वर्मा, विद्या विहार, कानपुर.

१०. हिंदी लेखिकाओं की आत्मकथाएँ– सरयू प्रसाद मिश्र, अमन प्रकाशन, कानपूर. २०११

११. हिंदी और मराठी दलित साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन, नवभारत प्रकाशन, दिल्ली, २०१२

१२. हिंदी और मराठी दलित साहित्य एक तुलनात्मक अध्ययन, नवभारत प्रकाशन, दिल्ली, २००७

१३. तुनलात्मक साहित्य–नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, १९८४

१४. स्त्री उपेक्षिता– सीमोन–द–बोऊवार, हिंदी पॉकेट्स बुक्स, नई दिल्ली, १९९५

इ). कोश, शब्दकोश:

१. बृहत् हिंदी कोश – संपा, कालिका प्रसाद, ज्ञानमंडल लिमिटेड, २०१४

२. हिंदी साहित्य कोश– धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञानमंडल लिमिटेड, १९८५

३. राजपाल हिंदी कोश– डॉ. हरदेव बाहरी

ई). पत्र–पत्रिकाएँ

१. अक्षरा

२. अक्षरगाथा

३. मिळून साऱ्याजनी

४. ललना

५. हंस

शोधार्थी	**शोध निर्देशक**
राधा लखनलाल देवहंस	डॉ. संजीवकुमार नरवाडे, प्रोफेसर